Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Remington Gail 6th October 2019 Shift 2
Subject Name:	Remington GAIL
Creation Date:	2019-10-06 17:14:28
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No
Show Watermark on Console?:	No
Highlighter:	No
Auto Save on Console?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	8801795
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	8801795
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	8801795
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 8801795 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

एक बार की बात है, अकबर और बीरबल शिकार पर जा रहे थे। अभी कुछ समय हुआ था कि उन्हें एक हिरण दिखा। जल्दबाजी में तीर निकलते हुए अकबर अपने हाथ पर घाव लगा बैठा। अब हालात कुछ ऐसे थे कि अकबर बहुत दर्द में था और गुस्से में भी।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes

Actual

Group Number :	2
Group Id :	8801796
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	8801796
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	8801796
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 8801796 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

हमारे देश में वर्तमान युग में कुछ वर्ग के व्यक्तियों को गया गुजरा और जिन क्षेत्रों में वे रहते हैं उन्हें गए गुजरे क्षेत्र समझा जाता है। वे लोग हैं वन क्षेत्रवासी, कृषि क्षेत्रवासी तथा श्रम श्रेत्रवासी। नगरीय क्षेत्र के रहने वाले सुविधा संपन्न एवं संपत्तिवान कथित अग्रणी लोगों उन्हें उपेक्षा और तिरस्कार का पात्र समझते हैं । कुछ उन्हें दीन हीन कहकर उन पर दया भी दिखाते हैं। विवकपूर्वक समीक्षा करें तो कथित सुविधासंपन्न और संपत्तिवानों की सुविधा और संपदा और उन गए गुजरे क्षेत्रों के अनुदान ऊपर ही टिकी है। वनों के वृक्षों और वनस्पतियों के उत्पाद, खनिज उत्पाद, किसान के कृषि उत्पाद या श्रमशील शिल्पिओं के शिल्प उत्पाद ही तो कथित सभ्य समाज की सुविधा और संपदाओं के आधार हैं, लेकिन विडंबना यह है कि मूल उत्पादक गए गुजरे और असभ्य माने जाते हैं और उनका उपयोग और व्यवसाय करने वाले अग्रणी, सभ्य, संपन्न कहे जाते हैं। वन, वनवासी का घर है। वे हजारों वर्षों से उस संपदा को सुरक्षित रखते हुए अपना जीवन यापन कर रहे हैं। उन्हें असभ्य असंस्कृत कहकर तिरस्कृत किया जाता है। जिन शहरी, नगरीय लोगों ने अपनी सुविधा और संपदा के लिए वन संपदा को तहस नहस कर दिया है उन्हें सभ्य, सुसंस्कृत, सम्मानीय माना जाता है। भूमि की उर्वरा शक्ति का उपयोग करके अन्य संपदा पैदा करने वाले कृषक को असभ्य, मूर्ख, उपेक्षणीय समझा जाता और जो उसी संपदा को किंचित रूपांतरिक करके अनापशनाप मुनाफा कमाता, लोगों को ठगता, व्यसन फैलाता है उसे सभ्य और समझदार, सम्मानीय माना जाता है। यह परिपाटी समझ से परे है। इसे व्यवसायिक कुशलता का नाम दिया जाता है और उनकी कमाई को जायज कहा जाता है। ध्यान रहे व्यवसाई की व्यावसायिक कुशलता किसी उत्पादक की उत्पादन कुशलता को सम्मानित करके उसे उचित मूल्य देने की व्यवस्था क्यों नहीं बनाता, उत्पादक को भी व्यवसाय का साझीदार मानकर उस कमाई का अंश देने में क्या हर्ज होता है, यह विचारणीय बिन्दु है। विवेक की दृष्टि से तो वह साझीदार है ही, उसे उसका भाग मिलना ही चाहिए। ऐसा करने से उत्पादन और व्यवसाय का संतुलन बना रहेगा। इससे व्यसन में लगने वाला धन कुपोषण दूर करने में लग जाएगा। जिनके व्यसन घटेंगे वे भी फायदे में रहेंगे और जिनका कुपोषण घटेगा वे भी लाभ में रहेंगे। दोनो प्रकार से समाज का हित साधन होगा। लेकिन यह व्यवस्था क्यों नहीं पाती, इसके लिए विचार किया जाना चाहिए। आज के युग में अपने लिए सुख सुविधाएं जुटाने वाले व्यक्ति को श्रेष्ठ और सम्मानीय माना जाता है यह सोच अवैज्ञानिक है। विज्ञान के अनुसार उसी मशीन को श्रेष्ठ माना जाता है जो कम इनपुट या साधन लें और अधिक आउटपुट या परिणाम दें। उसकी एफिशिएंसी यानी दक्षता इसी आधार पर नापी जाती है। मशीन की तरह मनुष्य की दक्षता का भी यह पैमाना होना चाहिए। मनुष्य को अपनी आवश्यकता कम से कम पूरी करके अधिक से अधिक पर परमार्थ प्रयोजनों में लगा देने वाली उच्च दक्षता वाला जीवन अपनाना चाहिए।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes